The Brāhmī, International Multidisciplinary Research Journal
(Peer Reviewed, Referred & Open Access Journal)
Volume: 01 | Issue: 01 | Mar-May 2024 | www.thebrahmi.com

पौराणिक उपन्यासकार के रूप में नरेंद्र कोहली

सुश्री पार्वती बारिक
पीएच. डी. शोधार्थी
रमादेवी महिला विश्वविद्यालय
विद्याविहार, भुवनेश्वर, ओड़िशा

आदर्श, यथार्थ और कल्पना की रोशनी में आज तक हमारा समाज अंधकार के निकट नहीं आ सका। इस कार्य में साहित्य का विशिष्ट योगदान रहा है। साहित्य का अर्थ मात्र भाषा का विकास या विचारों का आदान-प्रदान नहीं है, अपितु साहित्य निर्विवाद रूप से समाज को एक ढांचे में संभाल कर रखता है। यह ढांचा उसकी सीमा नहीं है बल्कि यह एक मर्यादा है, एक आदर्श है जिसकी देखरेख में समाज का निर्माण लिखा है। साहित्य सामाजिक चेतना में जन्म लेता है और उसी में फलता-फूलता है। मानव मात्र का हित ही साहित्य का परम उद्देश्य है। साहित्य समाज की गतिविधियों का चित्रण करता है। इसमें में विषयों की विविधता पाई जाती है। विषयों की इस विविधता ने भी समाज को जोड़े रखने में अपना उचित सहयोग दिया। साहित्य की भाषा सरल, स्पष्ट और तथ्यपरक होती है। ऐसे में यदि गद्य विधाओं की बात की जाए तो उसमें किसी भी प्रकार के बनावट का सवाल ही नहीं उठता। गद्यकार अपनी भाषा को हर माध्यम से सरल और स्पष्ट रखने का प्रयास करता है। उनका सारा ध्यान गद्य के विषय पर होता है। ये वही विषय है जिसकी विविधता ने साहित्य को और समाज को एक ढांचे में जोड़े रखा है।

तुम वहन कर सको जन-मन में मेरे विचार।

वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार!!

समय के साथ-साथ चलते रहना जीवन की मांग है। वही समय आगे चलकर या तो कठिनाइयों भरा रहता है या फिर विकास के नए आयामों से साक्षात्कार करता है। यह नयापन समाज के साथ ही साहित्य में भी देखने को मिलता है। इसका एकमात्र कारण यही है कि साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्यकार समाज में रहकर समाज की प्रत्येक गतिविधियों को देखता है, परखता है तथा परिलक्षित होनेवाले विभिन्न समस्याओं का अध्ययन साहित्य के माध्यम से करता है।

गद्य विधाओं में उपन्यास का एक अहम योगदान रहा है। सामाजिक जीवन के निकट होने के कारण ही उपन्यास को 'आधुनिक युग का महाकाव्य' कहा गया है। उपन्यास का मूल संबंध यथार्थ से माना गया है और इसी अर्थ में यह पारंपरिक आख्यायिकाओं से अलग भी है। अध्ययन की सुविधा के लिए हिंदी उपन्यास का काल विभाजन स्थूल रूप से प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग तथा स्वातंत्रयोत्तर युग के रूप में किया गया। प्रेमचंदोत्तर युग में जिन विषयों का विकास हुआ, उन्हीं का आगे चलकर स्वातंत्रयोत्तर युग में नवनिर्माण देखा गया। नरेश मेहता, मोहन राकेश, श्रीलाल शुक्ल, धर्मवीर भारती, कमलेश्वर, नरेंद्र कोहली आदि इस धारणा में मूर्धन्य लेखकों में गिने जाते हैं।

पौराणिक उपन्यास एवं ऐतिहासिक उपन्यास

मूलतः किसी भी कालखंड विशेष का चित्रण ऐतिहासिक उपन्यास हो सकता है। किंतु ऐतिहासिक उपन्यास होने के लिए एक अनिवार्य स्थिति है – उसकी कथा का प्रख्यात् होना, पाठकों का उससे पूर्व-परिचित होना। दूसरी ओर हम अपनी पौराणिक कथाओं को भी अपना प्राचीन इतिहास ही मानते हैं; किंतु विद्वानों का एक वर्ग विदेशी सिद्धांतों के अनुसार उसे 'मिथ' अथवा 'मिथ्या' ही मानना चाहता है। अतः वह उसे अपना इतिहास नहीं मानता। परिणामतः पौराणिक उपन्यासों की, ऐतिहासिक उपन्यासों से एक अलग श्रेणी बन गई है। जहां तक मेरा मानना है इन दोनों वर्गों का अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व है। भारतीय संदर्भ में ऐतिहासिक उपन्यास इतिहास से जुड़े हैं, और पौराणिक उपन्यास भारत की पुरातन जड़ों से जुड़े हैं।

The Brāhmī, International Multidisciplinary Research Journal
(Peer Reviewed, Referred & Open Access Journal)
Volume: 01 | Issue: 01 | Mar-May 2024 | www.thebrahmi.com

ऐसे भी उपन्यास मिलते हैं जो पौराणिक काल, घटनाओं और चरित्रों पर आधारित तो होते हैं, किंतु उस मूल-व्यवस्था का अनुमोदन नहीं कर पाते जो पौराणिकता का आधार रखता है। ऐसे में उन्हें पौराणिक उपन्यास कहना उचित नहीं है। पौराणिक उपन्यास केवल एक काल विशेष की घटनाएँ ही नहीं हैं, उनकी अपनी एक व्यवस्था है। वे उपनिषदों के मूल्यों को चरित्रों के माध्यम से उपन्यास के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। पात्रों एवं घटनाओं में कोई अंतर नहीं होता, अंतर का दायरा लेखक के विचारों से बढ़ता है। गौरतलब बात यही है कि उन दायरों में किसी भी रूप में न संस्कृति को हानि पहुंचती है और न ही समाज को।

नरेंद्र कोहली और पौराणिक लेखन

हिन्दी साहित्य जगत के जाने माने उपन्यासकार श्री नरेन्द्र कोहली का जन्म 6 जनवरी 1940 ई. को स्यालकोट, पंजाब में हुआ। वर्तमान समय में यह स्थान पाकिस्तान में है। नरेन्द्र कोहली के लिए उनका लेखन मात्र कार्य नहीं था। उनकी हर एक रचना में दायित्व का बोध होता है, दायित्व समाज के प्रति, दायित्व हिन्दू संस्कृति के प्रति। कहना न होगा कि नरेंद्र कोहली एक दायित्ववान रचनाकार हैं। मानव जीवन में पाये जाने वाले अंतर्विरोध, विसंगतियों और सामाजिक विषमताओं को उन्होंने अपने पौराणिक रचनाओं का विषय बनाया है। जिन पौराणिक कथाओं को भारतीय समाज केवल भक्ति के दायरे में रखता था, उन कथाओं को कोहली जी ने सीमा मुक्त किया है। वर्तमान समाज जिन विसंगतियों से जूझ रहा है, उसकी जड़ें पुरातन जगत में ही रोपी गई थी। नरेंद्र कोहली ने उन्हीं जड़ों को खोज कर समाज के सामने रखा है। उनके पौराणिक उपन्यास हर मायने में समाज का आईना बनकर सामने आए हैं। आईना जिसने समाज को अपनी जड़ों से जोड़े रखा है। आईना जिसने भारतीय परंपरा और संस्कृति को विलीन होने से रोका है। आईना जिसमें सनातन सत्य है और कुछ नहीं।

कोहली जी ने भारत की प्रसिद्ध पौराणिक कथाओं रामकथा, महाभारत कथा तथा कृष्ण सुदामा कथा को आधार बनाकर एक नवीन और आधुनिक दृष्टि से युगीन संदर्भों के तहत देखने-परखने का प्रयत्न किया है। नरेंद्र कोहली हर मायने में पौराणिक लेखन के क्षेत्र में खरे उतरते हैं। आधुनिक युग के लेखक होने के बावजूद नरेंद्र कोहली पाश्चात्य साहित्य का अनुकरण नहीं करते। उन्होंने अपना व्यक्तित्व अपने लेखन कौशल और विचारों की उदात्तता से स्वयं बनाया है। चाहे कथा राम की हो या महाभारत से जुड़े संग्राम की हो, नरेंद्र कोहली ने उसे मात्र कथा के रूप में नहीं देखा। महाभारत जैसे पौराणिक घटना को सूक्ष्मता से पहचाना है नरेंद्र कोहली जी ने।

आज तक के मंच पर दिए गए एक साक्षात्कार में उन्होंने महाभारत के तमाम पात्रों में अपनी संवेदना कुंती से जोड़ते हुए स्वीकारा है कि आमतौर पर जन समुदाय द्रौपदी से ज्यादा जुड़ पाता है मगर उन्हें कुंती के चरित्र ने अधिक प्रेरित किया। उनके अनुसार कुंती का जीवन शुरू से लेकर अंत तक परेशानी, दुविधा और चिंता से भरा रहा। अपने साक्षात्कार में उन्होंने मोटे तौर पर जिन विचारों को रखा, उसका सूक्ष्म अध्ययन उनके उपन्यास 'महासमर' में देखने को मिलता है।

पौराणिक रामकथा

नरेन्द्र कोहली ने रामकथा से सामग्री ले कर चार खंडों में 1800 पृष्ठों का एक वृहद उपन्यास लिखा- **अभ्युदय**। बहरहाल संपूर्ण रामकथा को ले कर, किसी भी भाषा में लिखा गया यह प्रथम उपन्यास है। यही कारण है कि यह उपन्यास समकालीन, प्रगतिशील, आधुनिक तथा तर्काश्रित रहा है। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा ही इसका आधार है, इसलिए इसमें जीवन के उदात्त मूल्यों का चित्रण है। हिन्दी पाठक वर्ग को उन प्रश्नों के उत्तर मिले, ऐसी शंकाओं का समाधान मिला जिनपर विचार करने की न किसी में क्षमता थी और न ही उतना साहस। पारंपरिक विचारों से अलग हटकर अपने मौलिक विचार रखना साहस का कार्य है। ऐसा साहसी कार्य एक लेखक ही कर सकता है, इसलिए उसे कलाकार कहा गया है। नरेंद्र कोहली निःसंदेह एक साहसी रचनाकार थे।

The Brāhmī, International Multidisciplinary Research Journal
(Peer Reviewed, Referred & Open Access Journal)
Volume: 01 | Issue: 01 | Mar-May 2024 | www.thebrahmi.com

पौराणिक कृष्ण – सुदामा कथा

नरेन्द्र कोहली ने एक उपन्यास अभिज्ञान कृष्णकथा को ले कर लिखा। कथा पौराणिक है, मगर बड़ी कुशलता से उसके राजनीतिक पक्ष को कोहली जी ने सामने रखा है। निर्धन सुदामा को सामर्थ्यवान श्रीकृष्ण सार्वजनिक रूप से अपना मित्र स्वीकार करते हैं। तत्पश्चात सामाजिक, व्यावसायिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सुदामा की वृद्धि होती है। इस कृति में श्रीभगवद्गीता का कर्म सिद्धांत है। इसमें न परलोक है, न स्वर्ग, नरक और न ही जन्मांतरवाद। कर्म सिद्धांत को एक ही जीवन के अंतर्गत, वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुरूप व्याख्यायित किया गया है। ऐसे अद्भुत तथा अभूतपूर्व कौशल के धनी हैं नरेन्द्र कोहली।

पौराणिक महाभारत कथा

महाभारत एक विराट कृति है, जो भारतीय जीवन, चिंतन, दर्शन तथा व्यवहार के उस पक्ष को सामने रखता है जिसे आमतौर लोग झुठलाते हैं। झुठलाते हैं यानि सच से भागते हैं। नरेन्द्र कोहली ने इस कृति को अपने युग में पूर्णतः जीवंत कर दिया है। उन्होंने जन समुदाय को सच से अवगत कराया है। पौराणिक कथा के रूप में महाभारत अत्यंत प्रसिद्ध है तथापि लोग इसे अपने घर में रखना पसंद नहीं करते। कारण इस कथा में झुलसता मानवीय संवेदना और पारिवारिक चेतना। पौराणिक होने के नाते इस कथा को अस्वीकारा नहीं जा सकता। नरेन्द्र कोहली ने अपने इस उपन्यास में जीवन को उस की संपूर्ण विराटता के साथ अत्यंत मौलिक ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने उन तथ्यों को एक नएपन के साथ सामने रखा जिसे लोग झुठला रहे थे। जीवन के वास्तविक रूप से संबंधित प्रश्नों का समाधान अनुभूति और तर्क के आधार पर इस कृति में पाया गया। महाभारत पढ़ना अपना जीवन पढ़ने के समान है। नरेन्द्र कोहली ने उन तमाम पौराणिक पात्रों जैसे- युधिष्ठिर, कृष्ण, कुंती, द्रौपदी, अर्जुन, भीम, तथा कर्ण आदि को अत्यंत नवीन रूप में पुनः चित्रित किया है। नरेन्द्र कोहली ने यह तक स्वीकारा है कि जिन पत्रों का चित्रण उन्होंने नए ढंग से किया है वही उन चरित्रों का महाभारत में चित्रित वास्तविक स्वरूप है। कहना न होगा कि महासमर पढ़ने के बाद इस कथन से हर कोई सहमत होगा s।

निष्कर्षतः पौराणिक उपन्यासों को लेकर एक तथ्य सामने आता है कि यह धारा कथा की कसौटी से आगे बढ़कर एक ऐसे आयाम पर पहुंचा है जहां से समाज सांस्कृतिक धरातल से और अधिक व्यापकता से जुड़ता है। समाज और संस्कृति के इस जोड़ को बनाए रखने में नरेंद्र कोहली का योगदान अतुलनीय है। ऐसा नहीं है कि हिन्दी उपन्यास पौराणिक कथाओं से जुड़ा नहीं था, मगर उनमें कहीं न कहीं कुछ अलगाव था। नरेंद्र कोहली ने इस भिन्नता को आधुनिक विचारों से दूर किया। उन्होंने पौराणिक कथाओं के मूल अस्तित्व को बनाए रखते हुए उनमें नवीनता का प्रसारण किया। पौराणिक पात्रों को आधुनिक समाज से जोड़ा। नरेंद्र कोहली का यह प्रयास हिन्दी साहित्य जगत में सराहनीय है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. *कोहली नरेन्द्र – महासमर (भाग 1-9), प्रकाशक- वाणी प्रकाशन, मूल्य- 3,641 रूपए।*
2. *कोहली नरेन्द्र – अभ्युदय (भाग 1-2), प्रकाशक- डायमंड पॉकेट बुक्स प्रकाशन, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़-2, नई दिल्ली-110020, मूल्य- 628 रूपए।*
3. *कोहली नरेन्द्र – अभिज्ञान, प्रकाशक- राजपाल एंड सन्स प्रकाशन, 1590 मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली- मूल्य- 628 रूपए।*
4. *कोहली अगस्त्य – एक व्यक्तित्व नरेन्द्र कोहली, प्रकाशक- क्रिएटिव बुक कंपनी, मूल्य – 80 रूपए।*